वर्ण विचार

वर्ण विचार के अंतर्गत हम वर्ण, वर्णमाला, स्वर – स्वर के भेद, व्यंजन – व्यंजन के भेद, अयोगवाह – अयोगवाह के भेद, अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर और उच्चारण के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण के बारे में पड़ेगे |

'ध्वनि' का सामान्य अर्थ है – "आवाज"

जैसे →

1. पंखा चलने की ध्वनि
2. पक्षीयों के चहकने की ध्वनि
3. साइकिल की घंटी की ध्वनि

Scanned with CamScanner

व्याकरण में ध्वनि का अर्थ है – "वर्ण"

जैसे → "हमारे यहाँ गणेश – उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है |"

गणेश = ग् + अ + ण् + ए + श् + अ

उत्सव = उ + त् + स् + अ + व् + अ

"वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है |"

वर्णमाला

किसी भाषा में प्रयोग होने वाले वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं |

जैसे → अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, क, ख, ग, घ, ङ्

→ आगत ध्वनियाँ = ऑ, ज़, फ़

→ हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण हैं |

Scanned with CamScanner

वर्ण के भेद

1. स्वर
2. व्यंजन

स्वर – स्वर के भेद

जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा मुँह में बिना रुके बाहर निकलती, उन्हें स्वर कहते हैं |

→ स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के किया जाता है |

→ हिंदी में 11 स्वर होते हैं |

→ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वर के भेद

1. ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

(1) ह्रस्व स्वर →

जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व

Scanned with CamScanner

(1) ह्रस्व स्वर →

जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं |

→ ह्रस्व स्वर चार होते हैं –

अ, इ, उ, ऋ

(2) दीर्घ स्वर →

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से लगभग दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं |

→ दीर्घ स्वर सात होते हैं →

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ |

(3) प्लुत स्वर →

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं |

→ जिस स्वर का उच्चारण प्लुत के रूप में किया जाता है उसके आगे हिंदी की गिनती का अंक ३ (तीन) लिखा जाता है |

जैसे → ओ३म्, भैया३, काका३

Scanned with CamScanner

स्वरों की मात्राएँ

मात्र → स्वरों के निश्चित चिह्नों को मात्र कहते हैं |

व्यंजन – व्यंजन के भेद

जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाए तथा हवा कंठ से निकल कर, मुँह में रुककर बाहर आए, उन्हें व्यंजन कहते हैं | हिंदी में मूल व्यंजन 33 है |

व्यंजन के भेद

1. स्पर्श व्यंजन
2. अंतस्थ व्यंजन
3. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन →

जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत या ओठो का स्पर्श करके मुख से बाहर आती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं |

→ स्पर्श व्यंजन 25 होते हैं (क् से म्) तक

→ स्पर्श व्यंजन को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है –

Scanned with CamScanner

→ स्पर्श व्यंजन 25 होते हैं (क् से म्) तक

→ स्पर्श व्यंजन को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है –

स्पर्श व्यंजन हैं –

कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
तवर्ग	त	थ	द	ध	न
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म

2. अंतस्थ व्यंजन → जिन व्यंजनों का उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के मध्य का होता है, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं |

अंतस्थ व्यंजन चार हैं – य र ल व

3. ऊष्म व्यंजन → जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय हवा मुँह में टकराकर ऊष्म (गर्मी) पैदा करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं |

ऊष्म व्यंजन भी चार हैं – श ष स ह

Scanned with CamScanner

→ अयोगवाह स्वर तथा व्यंजन के साथ लगते हैं |

अयोगवाह के भेद

1. अनुस्वार
2. विसर्ग

(1) **अनुस्वार** ( ) → अनुस्वार का चिह्न बिंदु ( ) होता है |

<u>जैसे</u> → हंस, अंश, कंस आदि

→ अनुस्वार का उच्चारण नाक से किया जाता है

(2) **विसर्ग** (:) → विसर्ग का चिह्न (:) है

<u>जैसे</u> → प्रात:, नम: अंत:, करण

→ विसर्ग का उच्चारण 'ह' के समान होता है |

(3) **अनुनासिक** ( ) →

अनुनासिक का चिह्न ( ) है |

→ इसे चंद्रबिंदु भी कहते है |

जैसे → आँख, गाँव, साँप आदि |

Scanned with CamScanner

(3) अनुनासिक ( ) →

अनुनासिक का चिह्न ( ) है |

→ इसे चंद्रबिंदु भी कहते है |

जैसे → आँख, गाँव, साँप आदि |

अनुनासिक का अर्थ है – नाक के पीछे से आने वाली ध्वनि

जैसे → माँ

→ अनुनासिक का उच्चारण नाक और मुँह से किया जाता है |

→ शिरो रेखा के ऊपर चंद्रबिंदु ( ) का प्रयोग किया जाता है |

जैसे → चाँद, गाँव, आँख

→ जब शिरोरेखा पर मात्रा लगी होती है, तो चंद्रबिंदु की जगह मात्र बिंदु ( ) लगा दिया जाता है |

जैसे → हैं, मैं, कहीं आदि

Scanned with CamScanner

उच्चारण के आधार पर वर्णों का वर्गीकरण

श्रेणी	उच्चारण स्थान	ध्वनियाँ
कंठ्य	कंठ (गला)	अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, 'ह' एवं विसर्ग
तालव्य	तालु	इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, य्, श्
मूर्धन्य	मूर्धा और जीभ	ऋ, ट्, ठ्, ड् ढ्, ण्, र, ष्, ड़्, ढ़्
दंत्य	दाँत	त्, थ्, द्, ध्, न्, ल, स, ज़
ओष्ठ्य	दोनों होंठ	उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म्,
नासिक्य	नाक	ङ्., ञ्, ण्, न्, म्
कंठतालव्य	कंठ और तालु	ए, ऐ
कंठोष्ठ्य	कंठ और ओठ	ओ, औ
दंतोष्ठ्य	दाँत और ओठ	व, फ़

Scanned with CamScanner